

# विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत      दिनांक 29-04-2021

वर्ग- अष्टम शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

प्रथमः पाठः

स्वस्थैव धनम्

(विधिलिङ्गलकारस्य पुनरावृत्तिः)

आज्ञर्थक प्रेरणा को विधि कहते हैं। संस्कृत भाषा में प्रार्थना, इच्छा, चाहिए, अनुमति, निमंत्रण एवं अनुरोध के अर्थ में विधिलिंग लकार का प्रयोग होता है। इसके रूप निम्न प्रकार चलते हैं

—

|  |         |           |          |
|--|---------|-----------|----------|
|  | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|--|---------|-----------|----------|

|        |        |         |        |
|--------|--------|---------|--------|
| प्रथमः | एत्    | एताम्   | एयुः   |
| पुरुषः | पठेत्  | पठेताम् | पठेयुः |
| मध्यमः | एः     | एतम्    | एत     |
| पुरुषः | पठे:   | पठेतम्  | पठेत   |
| उत्तमः | एयम्   | एव      | एम     |
| पुरुषः | पठेयम् | पठेव    | पठेम   |

(अ॒ध्या॒पकः कृ॒क्षा॑ं प्रवि॒शति। सर्वे छा॒त्राः उत्था॒य  
अ॒ध्या॒पकं नमन्ति। अ॒ध्या॒पकः छा॒त्रान् दृष्ट्वा  
पृच्छति।)

अ॒ध्या॒पकः - किं सर्वे छा॒त्राः उपस्थिताः?

एकः छा॒त्रः - आचार्यः! संजीवः नागच्छत्।

अ॒ध्या॒पकः - किमर्थम्? अपि तस्य गृहे सर्वं  
कुशलम्?

राजीवः - न आचार्यः! सः तु कृतुज्वरेण  
पीडितः अस्ति। अतः विद्यालयय नागच्छत्।





